वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वेद प्रकाश

मासिक पत्र (6-7 प्रतिमाह) मूल्यः ५ रुपये (३०/-वार्षिक) फरवरी २०१७

कुल पृष्ठ संख्या २०, वजनः 40 ग्राम
प्रकाशन तिथिः 4 फरवरी 2017

अन्तःपथ

पूज्य उपाध्याय जी की मनुस्मृति	३ से ९
–प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	
Why Meditation is necessary?	९ से १०
शंका समाधान	११ से १२
–डॉ. विवेक आर्य	
योग और भोग एक प्रेरक कथा	१२ से १४
आइये जानते हैं कौन सी धातु के बर्तन में भोजन करने से क्या-क्या लाभ और हानि होती है	१४ से १५
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों?	१५ से १८

अनमोल विचार

पक्के हुए फल की तीन पहचान होती है...
एक तो वह नर्म हो जाता है दूसरा वह मीठा हो जाता है।
तीसरा उसका रंग बदल जाता है...
इसी तरह से पपिक्व व्यक्ति की भी तीन पहचान होती है...
पहली उसमें नम्रता होती है...
दूसरे उसकी वाणी में मिठास होती है और
तीसरे उसके चेहरे पर आत्मविश्वास का रंग होता है।

एक प्रेरक कथा अन्त मति सो गति

अनेक व्यक्तियों का कहना है–"अन्त मति सो गति", अर्थात् मृत्यु के सन्निकट मनुष्य का जैसा विचार होगा, वैसी ही उसकी गति होगी परन्तु यह बात विचारणीय है, क्योंकि मृत्यु के समय जब प्राण कण्ठ में अटक रहे हों तब ऐसी बातें कहने का क्या लाभ? उस समय वह कुछ करने धरने की स्थिति में नहीं होता। अन्तिम अवस्था में मनुष्य के अन्दर वही विचार उभरते हैं जिनका वह अतीत में अभ्यस्त होता है। जीवनभर पापकर्मों में लिप्त रहने वाले व्यक्ति के लिए अन्त समय में मन के अन्दर अच्छी अवस्था में भावनाएँ लाना असम्भव है। मृत्यु के समय मनुष्य अवचेतन भर होता है। उस समय उसके वही संस्कार उद्‌बुध होते है जिनमें वह जीवन घूमता रहा है। उसके समाने अपने जीवन के समस्त कर्मों का दृश्य सिनेमा की रील की भाँति उपस्थति हो जाता है। यदि उसके अच्छे कर्म रहे हैं तो वह प्रसन्नचित्त रहता है, मुख पर शान्ति की आभा फैल जाती है। वह प्रभु का स्मरण करता है। यदि उसके कर्म बुरे रहे हैं तो वह उनके दुष्परिणामों से काँप उठता है। पश्चात्ताप की अग्नि में जलने लगता है। मुख पर उदासी छा जाती है और कहने पर भी प्रभु का नाम उसके मुँह से नहीं निकल पाता। पुण्यात्मा व्यक्ति के मुख से ही अन्तकाल में प्रभु का नाम निकलता है। जैसा कि महर्षि दयानन्द ने अपने अन्तिम समय में ओ३म् नाम का स्मरण करते हुए वेदमन्त्रोच्चारण के साथ कहा था–"हे ईश्वर तेरी! इच्छा पूर्ण हो।" अतः प्रतिदिन किया गया प्रभु का स्मरण मनुष्य की शक्ति को क्षीण नहीं होने देता। प्रातः सायं स्मरण करते रहने से ताजगी बनी रहती है। भौतिक शरीर की नश्वरता को ध्यान में रखकर प्रभु की शक्ति पाकर यदि मनुष्य कर्त्तव्य कर्मों में प्रवृत्त रहेगा तो उसके कर्म उसे अमर बना देंगे। मृत्यु का स्मरण मात्र से उस दुष्कर्मों में प्रवृत्त होने से बचाता रहेगा।

वेदप्रकाश

वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६६ अंक ७ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, फरवरी, २०१७

सम्पा॰ **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व॰ **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

पूज्य उपाध्याय जी की मनुस्मृति

–राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदन सदन,

अबोहर–१५२११६

महर्षि दयानन्द वैदिक धर्म की रक्षा तथा वेदोद्धार के लिए जब रणक्षेत्र में उतरे तो उनका सिंह नाद सुनकर देश जाग उठा। ऋषि को दो मोर्चों पर लड़ाई लड़नी पड़ी। परकीय मतों से आर्य जाति और वैदिक धर्म की रक्षा के लिये मौलवियों व पादरियों की विशाल सेना से टक्कर लेनी पड़ी। शास्त्रार्थ करने पड़े। देश भर के पौराणिक पण्डितों के मन और मस्तिष्क से पौराणिक अंधविश्वासों की परतों को हटाकर उन्हें विशुद्ध वैदिक धर्म का दर्शन कराना भी एक अति कठिन कार्य था। हिन्दू पण्डित प्रत्येक संस्कृत वाक्य व श्लोक को प्रमाण मानकर सब वेद विरुद्ध मान्यताओं को वैदिक धर्म समझे बैठे थे।

दण्डी गुरु ने कसौटी दी:–

गुरु विरजानन्द जी से प्राप्त सत्यासत्य को परखने की एक अनूठी कसौटी लेकर उन्होंने महासंग्राम छेड़ दिया। यह थी आर्ष और अनार्ष साहित्य के भेद की कसौटी। जो भी ग्रन्थ वेद विरुद्ध है वह अप्रमाणिक व त्याज्य है। वह अनार्ष है। आर्ष ग्रन्थों में भी यदि कहीं कोई वाक्य व कथन वेद विरुद्ध है तो वह प्रक्षिप्त है। त्याज्य व अप्रमाणिक है। अपने मूल स्वरूप में भारत या महाभारत में कुछ सहस्र श्लोक थे। आज एक लाख से ऊपर श्लोक है। धर्म शास्त्रों में कहीं-कहीं इतनी मिलावट हुई कि मानों दूध में पानी नहीं मिलाया गया। प्रत्युत पानी में दूध मिला दिया गया।

नवयुग की पग आहट:–

काशी शास्त्रार्थ नवयुग की पग आहट थी। सागर पार के देशों में भी ऋषि की सिंह गर्जना सुनी गई। आर्ष और अनार्ष ग्रन्थों पर प्रामाणिक और अप्रमाणिक

पर स्थान-स्थान पर शास्त्रार्थ होने लगे। ऋषि के पास कार्य अनेक थे, समय योग मिला। ग्रन्थों के शुद्धिकरण के सूत्र तो दे दिये, दिशा निर्देश तो कर गये परन्तु वे क्या-क्या करते?

प्राणवीर पं० लेखराम ने पहल की थी:–

ऋषि के समर्पित विद्वान् शिष्यों की वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार, जाति रक्षा तथा शास्त्रार्थों से ही अवकाश न मिल सका। प्राणवीर पं० लेखराम जी सबसे पहले आर्य विद्वान् थे जिन्होंने मनुस्मृति के प्रक्षिप्त लोकों को निकालकर मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोकों को निकालकर मनुस्मृति का एक शुद्ध संन्स्करण निकालने का संकल्प किया। विश्व प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् और इतिहासकार की पं० भगवद्दत्त जी ने यथार्थ ही लिखा है, "आर्य समाज के इतिहास में आपकी [पं० लेखराम जी] एक ऐसी विभूति है जिसने अपने आचार्य के बहुत से गुण अपने भीतर आत्मसात् किये।"

पं० लेखराम के प्रयास:–

आर्यसमाज के आरम्भिक काल के एक विद्वान् सेवक श्री लाला बनवारी लाल जी करनाल निवासी ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि अपने बलिदान से पूर्व जनवरी सन् 1847 में पं० लेखराम जब अन्तिम बार करनाल पधारे तो आपने बताया था कि वे मनुस्मृति का एक प्रक्षेप रहित संस्करण तैयार करने वाले हैं। इसके लिए आपने मनुस्मृति के पचासों संस्करण व भिन्न-भिन्न टीका में संग्रहीत कर लीं।[1] धर्म की बलिवदी पर पण्डित जी के बलिदान के कारण यह कार्य न हो सका।

स्वामी दर्शनानन्द जी का प्रयास:–

स्वामी दर्शनानन्द जी ने पं० कृपाराम के रूप में मनुस्मृति का उर्दू अनुवाद किया। इसमें यत्र तत्र पाद टिप्पणियाँ देकर प्रक्षिप्त श्लोकों पर अपना मत दिया। यह प्रयास अच्छा तो था परन्तु बहुत अधूरा था। स्वामी जी यदि एक विस्तृत भूमिका भी लिख देते तो अधिक लाभ होता।

पं० तुलसीराम जी का प्रयास:–

श्री पं० तुलसीराम जी ने भी मनुस्मृति के अपने भाष्य में प्रक्षिप्त श्लोकों पर अपने विचार दिये परन्तु यह प्रयास भी प्रशंसनीय होते हुए प्रयोजन की सिद्धि न कर सका। इससे धर्म प्रेमियों तथा अवेषकों लेखकों की तृप्ति न हो सकी।

---

1. द्रष्टव्य 'पं. लेखराम आर्य मुसाफिर का धर्म पर सच्चा बलिदान' पृष्ठ 7-8 तथा रक्तसाक्षी पं. लेखराम लेखक 'राजेन्द्र' जिज्ञासु।

पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय जी का ऐतिहासिक प्रयासः–

अब विश्व प्रसिद्ध वैदिक विचारक, महान् दार्शनिक तथा यशस्वी लेखक पूज्य पं० गंगाप्रसाद जी ने इस करणीय कार्य को हाथ में लिया। आर्यसमाज के कई शीर्षस्थ नेताओं व विद्वानों की प्रेरणायें व शुभ कामनायें आपके साथ थीं। पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी की इच्छा को तो आप आदेश मानते ही थे। इस कठिन कार्य के लिये बहुमुखी प्रतिभा के धनी आपके पुत्र रत्न डॉ. रत्यप्रकाश जी ने इस कार्य को सिर चढ़ाने के लिये प्रबल अनुरोध किया। मनुस्मृति से सम्बन्धित पर्याप्त साहित्य आप ही ने पिता श्री को उपलब्ध करवाया। पूज्य उपाध्याय जी ने स्वयं लिखा है कि मेरे प्रत्येक ग्रन्थ के सृजन में मेरे पुत्रों का विशेष रूप से सत्यप्रकाश जी का भरपूर सहयोग मुझे मिलता रहा है। मनुस्मृति का संस्करण तैयार करने में स्वामी सत्यप्रकाश जी के उत्साह व सहयोग के बारे मैंने उपाध्याय जी से भी सुना रखा था और स्वामजी जी से भी इस विषय में बहुत कुछ सुना।

उपाध्याय जी की मनुस्मृति का मूल्याङ्कन करने से पहले हम यह बताना आवश्यक समझते ळं कि उस युग के आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वानो व महात्माओं ने जी खोलकर इसकी प्रशंसा की। पूज्य स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रनन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, पं० धर्म देव विद्यामार्तण्ड और श्रद्धेय देहलवी जी इसे एक ऐतिहासिक देव मानते थे। डॉ० भीमराव जी अम्बेडकर ने हिन्दू कोड बिल पास करवाते समय मनुस्मृति की अनेक टीकायें व संस्करण इकट्ठे किये थे। श्रद्धेय उपाध्याय जी की मनुस्मृति भी क्रय की गई। आर्यसमाज के दृष्टि कोण को समझने में पूज्य उपाध्याय जी की इस कृति से डॉ० अम्बेडकर जी को बड़ा लाभ मिला।

स्थायी महत्व का यह पहला ऐतिहासिक संस्करण थाः–

मनुस्मृति को प्रक्षेप रहित बनाने का पहला व अरम्भिक प्रयास तो श्री स्वामी दर्शनानन्द जी का था परन्तु, स्थायी महत्त्व का बड़ा और ऐतिहासिक प्रयास तो पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की मनुस्मृति ही है। इसकी गरिमा न मौलिकता का मूल्याङ्कन न करना, इसे न समझना साहित्यकारों, इतिहासकारों का पक्षपात तथा मतांधता ही तो है। यहाँ यह भी बता दें कि उपाध्याय जी को वैदिक धर्म के रंग में गगने वाले पं० कृपाराम (स्वामी दर्शनानन्द) ही थे। आज डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी की मनुस्मृति की विद्वानों में अच्छी धूम होनी ही चाहिये। इस दिशा में ज्ञान के फाटक किसी ने खोले तो वे थे साहित्य पिता पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी। उनके इस उपकार का वर्णन करने के लिए शब्द कहाँ से लाये जायें?

इस पुस्तक की विलक्षणता:–

उपाध्याय जी की मनुस्मृति की एक अधूरी विलक्षणता यह है कि आपने **'सेवकों'** का इनमें से निकलकर बहुत दूरदर्शिता व साहस का परिचय दिया। एक प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान ने इसे प्रकाशित करना चाहा परन्तु, शर्त यह रखी कि प्रशिक्षित श्लोक इसमें से न निकाले जायें। उन्हें छोटे अक्षरों में छाप दिया जाये। उपाध्याय जी ने तब लिखा था कि घर में झाड़ू लगा कर वही एक कोने में कूड़े का ढेर लगा देना। यह कोई झाड़ू देना नहीं है। दूध में से मक्खी निकाल कर गिलास के एक सिरे पर चिपका देना यह कोई दूध को छानना नहीं माना जा सकता। अच्छी पुस्तक का पढ़ना बुरी पुस्तक के न पढ़ने से कहीं अच्छा है। अनिष्ट के रहने से अनिष्टता नहीं जा सकेगी। उसका प्रभाव बना की रहेगा। उपाध्याय की इस मौलिक सूझ का मूल्याङ्कन करना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है।

पीछे जो बात आरम्भ में लिखी गई है उसी को उपाध्याय जी ने कभी ऐसा लिखा था, **"ऋषि दयानन्द के पास समस्त घर को झाड़ने का न समय था न साधना।"** यह भी ध्यान दिलाया, "वैदिक साहित्य की पुस्तकें जितनी पुरानी है, उतनी है 'क्षेपकों' से भरी पड़ी है, और सामाजिक सुधार करने वालों के मार्ग में रोड़ा अटकाती रही हैं।"

एक आक्षेप का उत्तर:–

कुछ मित्र आज भी और उपाध्याय जी के जीवन काल से ही यह आक्षेप करते चले आ रहे हैं कि उपाध्याय जी ने कई ऐसे श्लोकों को भी निकाल दिया हैं जिन्हें ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में प्रमाण स्वरूप उद्धृत किया है। यही आक्षेप कुछ बन्धु श्री डॉ० 'सुरेन्द्र कुमार जी पर भी करते हैं।

मनुस्मृति में बहुत कुछ प्रक्षिप्त है, इस बात को सुझाने बताने का पूरा-पूरा श्रये तो दण्डी गुरु विरजानन्द जी के शिष्य महर्षि दयानन्द को ही प्राप्त है। ऋषि की दी गई इसी कसौटी पर कसकर उपाध्याय जी ने क्षेपक निकाले हैं। झाड़ू लगाते हुए मकान की झाड़ पूछ करते-करते कूड़े के साथ कभी-कभी पलस्तर की चपड़ी भी उतर जाती है। उपाध्याय जी इसके साथ ही यह उत्तर दिया करते थे कि दक्ष से दक्ष सर्जन भी जब ऑपरेशन करता है तो शुद्ध रक्त की भी दो चार बूँदे निकल ही आती है। इसके साथ ही पाठक यह न भूलें कि मनुस्मृति बौद्ध या पौराणिक काल को न होने से और अति प्राचीन होने के कारण वैदिक धर्म के अधिक होने से ऋषि जी को मान्य है। वेद सत्यासत्य की सबसे बड़ी

कसौटी है। सिद्धान्त मुख्य है। भावुकात में बहकर आक्षेप करना तो बहुत सरल है परन्तु, ऐसा करना हितकर नहीं है। ऋषि जी ने मनुस्मृति के श्लोकों को उतना-उतना ही प्रामाणिक माना है जितना-जितना वे वेदानुकूल है।

उपाध्याय जी ने अपने आलोचकों को युक्ति, तर्क व प्रमाण से बहुत अच्छा उत्तर देते हुए कहा था कि कहीं-कहीं तो किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए, कहीं अपने सिद्धान्त की पुष्टि में किसी श्लोक से एक आधा सूत्र हाथ लगा तो उसे उद्धृत कर दिया अन्यथा मनुस्मृति के वर्तमान स्वरूप में, मनुस्मृति के मुख्य प्रकरण में ऐसे श्लोकों की संगति कतई नहीं लगती। आर्यसमाज में कई सज्जन ब्राह्मण ग्रन्थों, दर्शनों के भाष्यों व गृह सूत्रों आदि को पूरा-पूरा आर्ष मानकर एक-एक बात के लिए हठ न विवाद करते हैं। ऐसे सब मित्रों को मूल तथा गौण का भेद जानना चाहिये। ऐसा पूज्य उपाध्याय जी तथा आचार्य उदयवीर जी के मुख्य से हम लोग सुनते रहें।

उपाध्याय जी की मनुस्मृति और उनक दूर दृष्टिः-

उपाध्याय जी के सहकारी व सहयोगी रहे पूज्य पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री कहा करते थे कि उपाध्याय जी आर्य समाज के अत्यन्त दूरदर्शी नेता व विद्वान् हैं। वे युग के प्रवाह को देखकर युग की माँग और आवश्यकता को जानकर जनहित के जिस विषय पर लेखनी उठानी चाहिए, उसी को लेते। आप अपने समय से पूर्व परियोजना बना कर कार्य आरम्भ कर देते थे। उनका ग्रन्थ रत्न आस्तिकवाद, 'नारीताला' (आस्तकता), मनुस्मृति कम्यूनिज़्म, Vedic culture' भारतीय, उत्थान और पतन की कहानी, Life After death आदि पुस्तकें जब लिखीं तब आर्यसमाज में किसी ने इन विषयों को इस शैली से नहीं उठाया था। उन्होंने कई वर्ष पहले यह भाँप लिया था कि मनुस्मृति को प्रक्षेप रहित न किया गया तो देश जाति की बहुत बड़ी हानि होगी। समाज में वैमनस्य व घृणा को रोका न जा सकेगा। आर्यसमाज में घुसपैठ करके एक दल बदलू मनु महाराज व मनुस्मृति पर विषैले भाषण देकर घृणा वैमनस्य फैला कर अपनी लीडरी चमकाने चाही।

उपाध्याय जी ने एक दिशा दी। उनके कार्य को श्री डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी ने आगे और बढ़ाकर यश पाया। कुछ सज्जन दोनों के कार्य की तुलना करके इनमें टकराओं व भेद अथवा विरोध की खोज करते हैं। यह इन लोगों का भ्रम है। डॉ० सुरेन्द्र जी ने उपाध्याय जी के कार्य को ही आगे बढ़ाया है। दोनों की शैली तो भिन्न मानी जा सकती है। भाव भेद मानना एक भयङ्कर भूल है। आज जयपुर हाईकोर्ट परिसर से मनु महाराज की प्रतिमा नहीं हटाई जा सकी तो इसका

श्रेय आर्यसमाज को प्राप्त है। हमारे इन्हीं दोनों प्रकाण्ड विद्वानों के तप का फल है कि वह प्रतिमा वहीं की वहीं है।

विषय से कुछ हटकरः–

विषय से थोड़ा हटकर यह बता देना चाहता हूँ कि पं० भगवद्दत्त जी श्री विजय जी की बात को कभी नहीं टालते। यदि विजय की 200–250 पृष्ठों की इसी विषय की एक पुस्तक पण्डित जी से लिखवा कर गोविन्दराम हासानन्द से प्रकाशित करवा देते तो विश्व साहित्य में आर्यसमाज की धूम मच जाती पं० भगवद्दत्त जी उपाध्याय जी की सतत साधना की भूरि–भूरि प्रशंसा किया करते थे। उनका कहना था कि उपाध्याय जी दिन रात चिन्तन करते व लिखते हुए थकते ही नहीं। इतने कार्य करते हुए मनुस्मृति पर ऐसी मौलिक पुस्तक की रचना कर देना उन्हीं का काम था।

प्रदूषण से बचायाः–

उपाध्याय जी के प्रत्येक लेख, प्रत्येक ट्रैक्ट, प्रत्येक छोटी बड़ी पुस्तक और प्रत्येक ग्रन्थ का अपना–अपना महत्व है। वे केवल लिखने के लिये ही नहीं लिखते थे। वे वैदिक धर्म के महत्त्व और तत्त्व को समझाने व उसे स्थ्ज्ञापित करने के लिए ही कुछ लिखते थे। 'प्रक्षेप' एक साहित्यिक रोग है। इसने प्राचीन धर्म शास्त्रों को प्रदूषित कर रखा था। केवल वेद संहितायें ही कण्ठाग्र करने वाले तपस्वी ब्रह्मणों के कारण इस प्रदूषण से बच पाये।

मानसिक अराजकता से बचा लियाः–

मनुस्मृति में क्षेषक है। यह तो बहुत विद्वान जानते थे परन्तु यह रोग बड़ा ऑपरेशन माँगता था। इसके लिये साहस व सूझ की आवश्यकत थी। उपाध्याय जी न अपने दिव्य दृष्टि से, साहस व सूझ से यह कार्य कर दिखाया। उन्हें जहाँ कहीं अन्तर्निरोध, पुनरुक्ति तथा वेद से विरोध दीखा अपने क्षेपकों को निकाल कर हिन्दू समाज का धार्मिक व सामाजिक अराजकता से बचा लिया। विद्वानों को झकझोरने व जगाने के लिए विस्तृत भूमिका लिखी। आज भी आवश्यकता है कि इस पुस्तक के सब भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित करके व्यापक प्रचार किया जाय।

'विजय दुंदभि बन गईः–

श्री अजयजी ने अपने संस्थान का कार्यभार सम्भालते ही इधर ध्यान दिया परन्तु पुस्तक कहीं से भी उपलब्ध न हुई। वह विवश थे। चलो। विलम्ब से ही, यह करणीय और श्रेष्ठ कार्य हो तो गया। बहुत से नेता और विद्वान् जातिवाद

के उन्मूलन, विद्यवाओं के उद्धार को चाहते हुए भी कुछ करने से डरते रहे। साहस शून्य नेता समाज सेवा, देश सेवा नहीं कर सकते। ऐसे ही लोग मनुस्मृति से क्षेपक निकालने की हिम्मत न जुटा सके महर्षि दयानन्द धन्य थे जिन्होंने मार्ग दिखाया। उपाध्याय जी धन्य ये जिन्होंने पक्की सड़क बनाकर मार्ग प्रशस्त कर दिया। श्री अजय बधाई के पात्र है जिन्होंने कुल परम्परा को निभाते हुए 'इस उत्तम कृति का प्रकाशन करके **'विजय दुंदभि'** एक बार फिर से बना दी है। आओ। हम सब महर्षि को नमन करें, साहित्य पिता उपाध्याय जी का शत शत वन्दन करें तथा अजय जी का प्रसार में भरपूर सहयोग करके धर्म लोभ प्राप्त करें।

Why Meditation is Necessary?*

Please read below from Medical Angle.

From the time of our birth till death the heart works continuously.

Everyday the heart pumps 7000 litres of blood, of which 70% blood is pumped to the brain and the remaining 30% to the rest of body.

The blood is pumped through veins/arteries which are about more than 70,000 km long. The strength required to pump the blood up to 42 ft high and weight of 1 tonne is generated by the heart everyday through its work.

We take rest when we are tired but if the heart takes rests for 4-5 mins we will have to rest forever. How does the heart work so much efficiently and effectively?

Heart works effectively because it follows a discipline. In normal conditions the heart takes 0.3 secs to contract (systole and 0.5 secs to relax (diastole). So. 0.3+0.5=0.8 secs are required by the heart to complete one beat. (1 cardiac cycle). That means in 1 min, the heart beats 72 times which is considered as normal heart beat.

During the relaxing phase of 0.5 secs the impure blood travels through the lungs and becomes 100% pure. In some stressful conditions the body demands more blood in less time and in this situation the heart reduces the relaxing period of 0.5 secs to 0.4 secs. Thus in this case the heart beats 82 times in 1 min and only 80% of blood gets purified.

On more and more demand the relaxing time is further reduced to 0.3 secs then only 60% of blood is purified. Thus 20&40% of impure blood is pumped in the veins/arteries. These impure

components (cholesterol/lipid) gets deposited on the walls of arteries/ veins and thus the elastic nature of the veins and the arteries is lost. So they become plastic in nature.

After some time due to the above conditions the veins/arteries become rigid. Now if a blood clot travels through the veins/arteries (which in normal conditions gets easily passes away due to the elastic nature earlier) gets blocked and resists blood flow in that area. This results in a blockage which further results in Heart Attack.

From the above discussion, we can easily realise that the main reason for the heart problems is the increase demand of blood by the brain and the body. When the activity of brain is stimulated it demands more amount of blood than that of normal conditions.

To stimulate the activity of brain 25-30% of diet we take is responsible whereas the remaining 70-75% is due to the thinking, emotions, attitude, memories and other processes of the brain.

So, those who want to keep their heart working effectively for a long period of time they should protect themselves from-worries, anger, sadness, emotins, sensitive behavior, stress and hurry.

To protect ourselves from the above, there is no Medication available!

So, the only option is MEDITATION.

So it it always said: SPIRITUAL HEALING IS ONLY THE TRUE HEALING.

शंका समाधान

–डॉ विवेक आर्य

हमारे मित्र जी ने एक शंका रखी है।

शंका–साई को मुसलमान घोषित कर और उन्हें मांसाहारी घोषित कर उनकी पूजा से रोकना आपका भारतीयों की श्रद्धा का अपमान है। अगर साई बाबा मुसलमान हुए भी और लोगों का कल्याण किया तो क्या हिन्दू उनको सम्मान नहीं दे सकता? आर्य समाज को संकीर्णता से बाहर आना होगा।

सामधान–अपने सुन्दर शंका प्रस्तुत की है। मैं तो यह कहूंगा कि आज हिन्दू समाज की सभी प्रकार की आध्यात्मिक बिमारियों का उपचार भी इसी शंका के समाधान में विदित है। श्रद्धा बिना ज्ञान के अन्धविश्वास को जन्म देती है। हिन्दू समाज आज साई बाबा की शिरडी स्थित कब्र और मुसलमानों की कब्रों पर

सर पटकता दिख रहा है। इसका मुख्य कारण बिना सोच समझे अनुसरण करना है।

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी अर्थात् जिसकी जैसी दृष्टि होती है, उसे वैसी ही मूरत नज़र आती है।

तुलसी दास जी द्वारा कथित इस चौपाई का अनुसरण करते हुए हिन्दू समाज ईश्वर की अलग-अलग कल्पना करते हुए ईश्वर के यथार्थ गुण, कर्म और स्वाभाव को भूल ही गया। कोई मूर्तियों को ईश्वर मानने लगा, कोई गुरुओं को ईश्वर मानने लगा (ईश्वर का अवतार) कोई भोगों से (वाममार्ग) ईश्वर प्राप्ति मानने लगा। इसका अंत परिणाम यही निकला कि मानव ईश्वर भक्ति के स्थान पर अन्धविश्वास में लिप्त होकर दु:खों को प्राप्त हुआ। स्वामी दयानंद तुलसीदास के इस कथन की बड़ी सुन्दर समीक्षा इस प्रकार से लिखते है। "एक बात तो वे लोग कहते हैं कि पाषणादिक तो देव नहीं है, परन्तु भाव से वे देव हो जाते हैं। उनसे पूछना चाहिये कि भाव सत्य होता है वा मिथ्या? जो वे कहें कि भाव सत्य होता है, फिर उनसे पूछना चाहिये कि कोई भी मनुष्य दु:ख का भाव नहीं करता, फिर उसको क्यों दु:ख है? और सुख का भाव सब मनुष्य सदा चाहते हैं, उनको सुख सदा क्यों नहीं होता? फिर वे कहते हैं कि यह बात तो कर्म से होती है। अच्छा तो आपका भाव कुछ भी नहीं ठहरा अर्थात् मिथ्या ही हुआ सत्य नहीं हुआ। आप से मैं पूछता हूं कि अग्नि में जल का भाव करके हाथ डाले तो क्या वह न जल जायेगा? किन्तु जल ही जायगा। इससे क्या आया कि पाषाण को पाषाण ही मानना, और देव को देव मानना चाहिए, अन्यथा नहीं। इससे जो पैसा पदार्थ है वैसा ही उसको सज्जन लोग मानें।"

सन्दर्भ स्वामी दयानंद सरस्वती का पत्र व्यवहार

स्वामी जी कल्पित ईश्वर के स्थान पर वेद विदित यथार्थ ईश्वर कि स्तुति, उपासना और उपासना करने का सन्देश देते है। आर्यसमाज का द्वितीय नियम इसी अटल सिद्धांत पर आधारित है।

"ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।"

अगर हिन्दू समाज के धर्मगुरुओं ने ईश्वर की सत्य परिभाषा एवं उनकी पूजा करने के विधान से परिचित करवाया होता तो आज हिन्दू समाज मुसलमानों की कब्रों पर सर न पट रहा होता।

योग और भोग एक प्रेरक कथा

(एक ही घड़ी मुहूर्त में जन्म लेने पर भी सबके कर्म और भाग्य अलग-अलग क्यों) एक प्रेरक कथा–

एक बार एक राजा ने विद्वान ज्योतिषियों और ज्योतिष प्रेमियों की सभा बुलाकर प्रश्न किया कि "मेरी जन्म पत्रिका के अनुसार मेरा राजा बनने का योग था मैं राजा बना, किन्तु उसी घड़ी मुहूर्त में अनेक जातकों ने जन्म लिया होगा जो राजा नहीं बन सके क्यों? इसका क्या कारण है?

राजा के इस प्रश्न से सब निरुत्तर हो गये क्या जवाब दें कि एक ही घड़ी. ..मुहूर्त में जन्म लेने पर भी सबके भाग्य अलग-अलग क्यों हैं। सब सोच में पड़ गये। कि अचानक एक वृद्ध खड़े हुये और बोले महाराज की जय हो आपके! प्रश्न का उत्तर भला कौन दे सकता है, आप यहाँ से कुछ दूर धने जंगल में यदि जाएँ तो वहाँ पर आपको एक महात्मा मिलेंगे उनसे आपको उत्तर मिल सकता है।

राजा की जिज्ञासा बढ़ी और घोर जंगल में जाकर देखा कि एक महात्मा आग के ढेर के पास बैठ कर अंगार खाने में व्यस्त हैं (गरमा गरम कोयला) सहमे हुए राजा ने महात्मा से जैसे ही प्रश्न पूछा महात्मा ने क्रोधित होकर कहा तेरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए मेरे पास समय नहीं है मैं भूख से पीड़ित हूँ। तेरे प्रश्न का उत्तर यहाँ से कुछ आगे पहाड़ियों के बीच एक और महात्मा हैं वे दे सकते हैं।"

राजा की जिज्ञासा और बढ़ गयी, पुनः अंधकार और पहाड़ी मार्ग पार कर बड़ी कठिनाइयों से राजा दूसरे महात्मा के पास पहुँचा किन्तु यह क्या महात्मा को देखकर राजा हक्का बक्का रह गया, दृश्य ही कुछ ऐसा था, वे महात्मा अपना ही माँस चिमटे से नोच नोच कर खा रहे थे।

राजा को देखते ही महात्मा ने भी डांटते हुए कहा "मैं भूख से बेचैन हूँ मेरे पास इतना समय नहीं है, आगे जाओ पहाड़ियों के उस पार एक आदिवासी गाँव में एक बालक जन्म लेने वाला है, जो कुछ ही देर तक जिन्दा रहेगा सूर्योदय से पूर्व वहाँ पहुँचो वह बालक तेरे प्रश्न का उत्तर का दे सकता है "सुन कर राजा बड़ा बेचैन हुआ बड़ी अजब पहेली बन गया मेरा प्रश्न, उत्सुकता प्रबल थी कुछ भी हो यहाँ तक पहुँच चुका हूँ वहाँ भी जाकर देखता हूँ क्या होता है।

राजा पुनः कठिन मार्ग पार कर किसी तरह प्रातः होने तक उस गाँव में पहुंचा, गाँव में पता किया और उस दंपति के घर पहुंचकर सारी बात कही और शीघ्रता से बच्चा लाने को कहा जैसे ही बच्चा हुआ दम्पत्ति ने नाल सहित बालक राजा के सम्मुख उपस्थित किया।

राजा को देखते ही बालक ने हँसते हुए कहा राजन् मेरे पास भी समय नहीं! है, किन्तु अपना उत्तर सुनो लो–तुम मैं और दोनों महात्मा सात जन्म पहले चारों भाई व राजकुमार थे। एक बार शिकार खेलते-खेलते हम जंगल में भटक गए। तीन दिन तक भूखे प्यासे भटकते रहे।

अचानक हम चारों भाइयों को आटे की एक पोटली मिली जैसे तैसे हमने चार बाटी सेकीं और अपनी-अपनी बाट लेकर खाने बैठे ही थे कि भूख प्यास से तड़पते हुए एक महात्मा आ गये। अंगार खाने वाले भइया से उन्होंने कहा–"बेटा मैं दस दिन से भूखा हूँ अपनी बाटी में से मुझे भी कुछ दे दो, मुझ पर दया करो जिससे मेरा भी जीवन बच जाय, इस घोर जंगल से पार निकलने की मुझमें भी कुछ सामर्थ्य आ जायेगी"

इतना सुनते ही भइया गुस्से से भड़क उठे और बोले तुम्हें दे दूंगा तो मैं "क्या आग खाऊंगा? चलो भागो यहाँ से।...वे महात्मा जी फिर मांस खाने वाले भइया के निकट आये उनसे भी अपनी बात कही किन्तु उन भइया ने भी महात्मा से गुस्से में आकर कहा कि बड़ी मुश्किल से प्राप्त ये बाटी तुम्हें "दे दूंगा तो मैं क्या अपना मांस नोचकर खाऊंगा?"

भूख से लाचार वे महात्मा मेरे पास भी आये, मुझे भी बाटी मांगी तथा दया चलो आगे "करने को कहा किन्तु मैंने भी भूख में धैर्य खोकर कह दिया कि. ..बढ़ो मैं क्या भूखा मरूँ?"

बालक बोला अंतिम आशा लिये वो महात्मा हे राजन! आपके पास आये, आपसे भी दया की याचना की सुनते ही आपने उनकी दशा पर दया करते हुये खुशी से अपनी बाटी में से आधी बाटी आदर सहित उन महात्मा को दे दी।

बाटी पाकर महात्मा बड़े खुश हुए और जाते हुए बोले तुम्हारा भविष्य तुम्हारे कर्म और व्यवहार से फलेगा"

बालक ने कहा उस घटना के आधार पर हम अपना! इस प्रकार हे राजन "राजन भोग, भोग रहे हैं, धरती पर एक समय में अनेकों फूल खिलते हैं, किन्तु सबके फल रूप, गुण, आकार प्रकार, स्वाद में भिन्न होते हैं।"

इतना कहकर वह बालक मर गया। राजा अपने महल में पहुंचा और माना कि ज्योतिष शास्त्र, कर्तव्य शास्त्र और व्यवहार शास्त्र है। एक ही मुहूर्त में अनेकों जातक जन्मते हैं किन्तु सब अपना किया, दिया, लिया ही पाते हैं। जैसा भोग भोगना होगा वैसे ही योग बनेंगे। जैसा योग होगा वैसा ही भोग भोगना पड़ेगा यही जीवन चक्र है।

आइये जानते है कौन-सी धातु के बर्तन में भोजन करने से क्या-क्या लाभ और हानि होती है

1. सोना एक गर्म धातु है। सोने से बने पात्र में भोजन बनाने और करने से शरीर के आन्तरिक और बाहरी दोनों हिस्से कठोर, बलवान, ताकतवर और मजबूत बनते हैं और साथ-साथ सोना आँखों की रोशनी बढ़ता है।
2. चाँदी एक ठंडी धातु है, जो शरीर को आंतरिक ठंडक पहुँचाती है। शरीर को शांत रखती है इसके पात्र में भोजन बनाने और करने से दिमाग तेज होता है, आँखों स्वस्थ रहती है, आँखों की रोशनी बढ़ती है और इसके अलावा पित्तदोष, कफ और वायु दोष को नियंत्रित रहता है।
3. काँसे के बर्तन में खाना खाने से बुद्धि तेज होती है, रक्त में शुद्धता आती है, रक्तपित शांत रहता है और भूख बढ़ाती है। लेकिन काँसे के बर्तन में खट्टी चीजे नहीं परोसनी चाहिए खट्टी चीजे इस धातु से क्रिया करके विषैली हो जाती है जो नुकसान देती है। कांसे के बर्तन में खना बनाने से केवल 3 प्रतिशत ही पोषक तत्व नष्ट होते हैं।
4. तांबे के बर्तन में रखा पानी पीने से व्यक्ति रोग मुक्त बनता है, रक्त शुद्ध होता है, स्मरणशक्ति अच्छी होती है–लीवर संबंधी समस्या दूर होती है, तांबे का पानी शरीर के विषैले तत्वों को खत्म कर देता है इसलिये इस पात्र में रखा पानी स्वास्थ्य के लिए उत्तम होता है तांबे के बर्तन में दूध नहीं पीना चाहिए इससे शरीर को नुकसान होता है।
5. पीतल के बर्तन में भोजन पकाने और करने से कृमि रोग, कफ और वायुदोष की बीमारी नहीं होती। पीतल के बर्तन में खाना बनाने से केवल 7 प्रतिशत पोषक तत्व नष्ट होते हैं।
6. लोहा के बर्तन में बने भोजन खाने से शरीर की शक्ति बढ़ती है, लोह तत्व शरीर में जरूरी पोषक तत्वों को बढ़ता है। लोहा कई रोग को खत्म करता है, पांडू रोग मिटाता है, शरीर में सूजन और पीलापन नहीं आने देता, कामला रोग को खत्म करता है और पीलिया रोग को दूर रखता है लेकिन लोहे के बर्तन में खाना नहीं खाना चाहिय क्योंकि इसमें खाना खाने से बुद्धि कम होती है और दिमाग का नाश होता है। लोहे के पात्र में दूध पीना अच्छा होता है।
7. स्टील के बर्तन नुकसान दायक नहीं होते क्योंकि ये ना ही गर्म से क्रिया करते है और ना ही अम्ल से इसमें खाना इसलिये नुकसान नहीं होता है बनाने और खाने से शरीर को कोई फायदा नहीं पहुँचता तो नुकसान भी नहीं पहुँचता।
8. एलुमिनियम बोक्साईट का बना होता है। इसमें बने खाने से शरीर को सिर्फ

नुकसान होता है। यह आयरन और कैल्शियम को सोखता है इसलिये इससे बने पात्र का उपयोग नहीं करना चाहिए। इससे हड्डियां कमजोर होती है। मानसिक बीमारियाँ होती है, लीवर औ नर्वस सिस्टम को क्षति पहुंचती है। उसके साथ-साथ किडनी फेल होना, टी.बी. अस्थमा, दमा, बात, रोग, शुगर जैसी गंभीर बीमारियाँ होती है। एलुमिनियम के प्रेशर कूकर से खाना बनाने से 87 प्रतिशत पोषक तत्व खत्म हो जाते हैं।

9. मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने से ऐसे पोषक तत्व मिलते हैं, जो हर बीमारी को शरीर से दूर रखते थे। इस बात को अब आधुनिक विज्ञान भी साबित कर चुका है कि मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाने से शरीर के कई तरह के रोग ठीक होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार, अगर भोजन को पौष्टिक और स्वादिष्ट बनाना है तो उसे धीरे-धीरे ही पकना चाहिए। भले ही मिट्टी के बर्तनों में खाना बनने में वक्त थोड़ा ज्यादा लगता है, लेकिन इससे सेहत को पूरा लाभ मिलता है। दूध और दूध से बने उत्पादों के लिए सबसे उपयुक्त है मिट्टी के बर्तन। मिट्टी के बर्तन में खाना बनाने से पूरे 100 प्रतिशत पोषक तत्व मिलते हैं। और यदि मिट्टी के बर्तन में खाना खाया जाए तो उसका अलग से स्वाद भी आता है। अर्थात् पानी पीने के लिए ताँबा, स्फटिक अथवा काँच पात्र का उपयोग करना चाहिए। सम्भव हो तो वैडूर्यरत्नजड़ित पात्र का उपयोग करें। इनके अभाव में मिट्टी के जल पात्र पवित्र व शीतल होते हैं। टूटे फूटे बर्तन से अथवा अंजलि से पानी नहीं पीना चाहिए।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों?

सर्वप्रथम, किसी भी मत की धर्मपुस्तक को उसके अनुनायियों के दावे से ईश्वरीय ज्ञान नहीं माना जा सकता है। हमें उसके दावे की परीक्षा करनी होगी-

1. ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक में किसी देश का भूगोल और इतिहास नहीं होना चाहिए। ईश्वरीय ज्ञान की धर्म पुस्तक संपूर्ण मानव जाति के लिए होनी चाहिए नाकि किसी एक विशेष देश के भूगोल या इतिहास से सम्बन्धित होनी चाहिए। अगर कुरान का अवलोकन करे तो हम पाते हैं कि विशेष रूप से अरब देश के भूगोल और मुहम्मद साहिब के जीवन चरित्र पर केन्द्रित हैं, जबकि अगर हम बाइबल का अवलोकन करे तो विशेष रूप से फिलिस्तीन (Palestine) देश के भूगोल और यहूदिओ (Jews) के जीवन पर केन्द्रित हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि ईश्वर ने कुरान की रचना अरब देश के लिए और

बाइबल की रचना फिलिस्तीन देश के लिए की हैं। वेद में किसी भी देश विशेष या जाति विशेष के अथवा व्यक्ति विशेष के लाभ के लिए नहीं लिखा गया हैं अपितु उनका प्रकाश तो सकल मानव जाति के लिए हुआ है।

2. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टी के आरंभ में आना चाहिये न की मानव की उत्पत्ति के लाखों वर्षों के बाद? केवल एक वेद ही हैं जो सृष्टि के आरंभ में ईश्वर द्वारा मानव जाति को प्रदान किया गया था। बाइबल 2000 वर्ष के करीब पुराना हैं, कुरान 1400 वर्ष के करीब पुराना हैं, जेंद अवस्ता 4000 वर्ष के करीब पुराना है। इसी प्रकार अन्य धर्म ग्रन्थ हैं।

   मानव सृष्टि की रचना कई करोड़ वर्ष पुरानी हैं जबकि आधुनिक विज्ञान के अनुसार केवल कुछ हजार वर्ष पहले मानव की विकासवाद द्वारा उत्पत्ति हुई हैं। जब पहले पहल सृष्टि हुई तो मनुष्य बिना कुछ सिखाये कुछ भी सीख नहीं सकता है। इसलिए मनुष्य की उत्पत्ति के तुरंत बाद उसे ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता थी।

3. ईश्वरीय ज्ञान किसी देश विशेष की भाषा में नहीं आना चाहिए। ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए दिया गया हैं, अत: उसका प्रकाश किसी देश विशेष की भाषा में नहीं होना चाहिये। किसी देश विशेष की भाषा में होने से केवल वे ही देश उसका लाभ उठा सकेगे, अन्य को उसका लाभ नहीं मिलेगा। कुरान अरबी में हैं और बाइबल इब्रानी (Hebrew) में हैं जबकि वेदों की भाषा वैदिक संस्कृत हैं जो कि सृष्टी की प्रथम भाषा हैं और सृष्टी की उत्पत्ति के समय किसी भी भाषा का अस्तित्व नहीं था। तब वेदों का उखव वैदिक भाषा में हुआ जो की पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों की सांझी भाषा थी। कालांतर में संसार की सभी भाषाएँ संस्कृत भाषा से ही अपभ्रंश होकर निकली हैं।

4. ईश्वरीय ज्ञान को बार-बार बदलने की आवश्यकता या परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। ईश्वर पूर्ण और सर्वज्ञ हैं। उनके किसी भी काम में त्रुटी अथवा कमी नहीं हो सकती। वे अपनी सृष्टी में जो भी रचना करते हैं उसे भली भांति विचार कर सकते हैं और फिर उसमें परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जिस प्रकार ईश्वर ने सृष्टि के आरंभ में प्राणीमात्र के कल्याण के लिए सूर्य और चंद्रमा आदि की रचना करी जिनमें किसी भी प्रकार के परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है। उसी प्रकार परमात्मा का ज्ञान भी पूर्ण हैं उसमें भी किसी भी प्रकार के परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं हैं। बाइबल के विषय में यह भी आता हैं कि बाइबल के भिन्न-भिन्न भाग भिन्न-भिन्न समयों पर आसमान से उतरे। इसी प्रकार मुस्लमान

अभी तक ये मानते हैं कि ईश्वर ने पहले जबूर, तौरते, इंजील के ज्ञान प्रकाशित करे फिर इनको निरस्त कर दिया और अंत में ईश्वर का सच्चा और अंतिम पैगाम कुरान का प्रकाश हुआ। बाइबल 2000 वर्ष पहले और कुरान 1400 वर्ष पहले प्रकाश में आया इसका मतलब जो मनुष्य 2000 वर्ष पहले जन्म ले चुके थे वे तो ईश्वर के ज्ञान से अनभिज्ञ ही रह गए। और इस अनभिज्ञता के कारण अगर उन्होंने कोई पाप कर्म कर भी दिया तो उसका दंड किसे मिलना चाहिए। ईश्वर का केवल एक ही ज्ञान हैं वेद जो कि सृष्टि की आदि में दिया गया था और जिसमें परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है क्यूंकि वेद पूर्ण हैं और सृष्टी के आदि से अंत तक मानव जाति का मार्गदर्शन करते रहेंगे। जैसे ईश्वर अनादी हैं उसी प्रकार ईश्वर का ज्ञान वेद भी अनादि हैं। वेद के किसी भी सिद्धांत को बदलने की आवश्यकता ईश्वर को नहीं हुई इसलिए केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं।

5. ईश्वरीय ज्ञान विज्ञान विरुद्ध नहीं होना चाहिए और उसमें विभिन्न विद्या का वर्णन होना चाहिए।

आज विज्ञान का युग हैं। समस्त मानव जाति विज्ञान के अविष्कार के प्रयोगों से लाभान्वित हो रही हैं। ऐसे में ईश्वरीय ज्ञान भी वही कहलाना चाहिए जो ग्रन्थ विज्ञान के अनुरूप हो। उसमें विद्या का भंडार होना चाहिए। उसमें सभी विद्या का मौलिक सिद्धांत वर्णित हो जिससे मानव जाति का कल्याण होना चाहिए। जिस प्रकार सूर्य सब प्रकार के भौतिक प्रकाश का मूल हैं उसी प्रकार ईश्वर का ज्ञान भी विद्यारूपी प्रकाश का मूल होना चाहिए। जो भी धर्म ग्रन्थ विज्ञान विरुद्ध बाते करते हैं वे ईश्वरीय ज्ञान कहलाने के लायक नहीं हैं।

Note:— बाइबल को धर्म ग्रन्थ मानने वाले पादरियों ने इसलिये गलिलियो (Galilio) को जेल में डाल दिया था क्यूंकि बाइबल के अनुसार सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हैं ऐसा मानती हैं जबकि गगिलियों का कथन सही था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती हैं। Note:—उसी प्रकार बाइबल में रेखा गणित (Algebra) का वर्णन नहीं हैं इसलिय देवी हिओफिया को पादरी सिरिल की आज्ञा से बेईज्जत किया गया था क्यूंकि वह रेखा गणित पढ़ाया करती थी। कुरान में इसी प्रकार से अनेक विज्ञान विरुद्ध बाते हैं जेसे धरती चपटी हैं और स्थिर हैं जबकि सत्य ये हैं कि धरती गोल हैं और हमेशा अपनी कक्षा में घुमती रहती हैं।

प्रत्युत वेदों में औषधि ज्ञान (auyrveda). शरीर विज्ञान (anatomy), राजनीति विज्ञान (political science), समाज विज्ञान (Social Science),

अध्यात्म विज्ञान (Spiritual sciencce), सृष्टि विज्ञान (origin of life) आदि का प्रतिपादन किया गया हैं।

आर्यों के सभी दर्शन शास्त्र और आयुर्वेद आदि सभी वैज्ञानिक शास्त्र वेदों को ही अपना आधार मानते हैं। अतः केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं, अन्य ग्रन्थ नहीं। वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने की वेद स्वयं ही अंतः साक्षी देते हैं। अनेक मन्त्रों से हम इस बात को सिद्ध करते हैं जैसे–

क. सबके पूज्य, सृष्टि काल में सब कुछ देने वाले और प्रलयकाल में सब कुछ नष्ट कर देने वाले उस परमात्मा से ऋग्वेद उत्पन्न हुआ, सामवेद उत्पन्न हुआ, उसी से अथर्ववेद उत्पन्न हुआ और उसी से यजुर्वेद उत्पन्न हुआ हैं–ऋग्वेद 10/90/9, यजुर्वेद 31/7, अथर्ववेद 19/6/13

ख. सृष्टि के आरंभ में वेदवाणी के पति परमात्मा ने पवित्र ऋषियों की आत्मा में अपनी प्रेरणा से विभिन्न पदार्थों का नाम बताने वाली वेदवाणी को प्रकाशित किया है–ऋग्वेद 10/71/1

ग. वेदवाणी का पद और अर्थ के सम्बन्ध से प्राप्त होने वाला ज्ञान यज्ञ अर्थात् सबके पूजनीय परमात्मा द्वारा प्राप्त होता हैं–ऋग्वेद 10/71/3

घ. मैंने (ईश्वर) ने इस कल्याणकारी वेदवाणी को सब लोगों के कल्याण किसलिए दिया हैं–यजुर्वेद 26

ङ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद स्कंभ अर्थात् सर्वाधार परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं–अथर्ववेद 10/7/20

च. यथार्थ ज्ञान बताने वाली वेदवाणियों को अपूर्व गुणों वाले स्कंभ नामक परमात्मा ने ही अपनी प्रेरणा से दिया हैं–अथर्ववेद 10/8/33

छ. हे मनुष्यों! तुम्हे सब प्रकार के वर देने वाली यह वेदरूपी माता मैंने प्रस्तुत कर दी हैं–अथर्ववेद 19/71/2

ज. परमात्मा का नाम ही जातवेदा इसलिए हैं कि उससे उसका वेदरूपी काव्य उत्पन्न हुआ हैं–अथर्ववेद 5/11/2

आइये ईश्वरीय के सत्य सन्देश वेद को जाने वेद के पवित्र संदेशों को अपने जीवन में ग्रहण कर अपने जीवन का उद्धार करें। वेदों में बहुत उच्च कोटि का ज्ञान विज्ञान है। एक योगी और व्याकरण निरुक्त निघण्टु आदि का विद्यवान व्यक्ति ही वेद मंत्रों का रहस्य समझ सकता है वरन् सायणाचार्य महीधर मैक्समूलर जैसे अनाडी लोगों ने वेद मंत्रों के अर्थ का अनर्थ कर डाला है। वेदों की शिक्षाओं को सरल भाषा में व सार रूप में समझने के लिये ऋषि दयानंद कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़ना चाहिये।

वेदप्रकाश

पं० रघुनन्दन शर्मा कृत ग्रन्थरत्न

वैदिक सम्पत्ति	पं. रघुनन्दन शर्मा	450.00

आचार्य अभयदेव विद्यालंकार कृत मार्मिक पुस्तकें

वैदिक विनय		300.00
ब्राह्मण की गौ		150.00
वैदिक उपदेश माला		20.00

श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय कृत महर्षि चरित

महर्षि दयानन्द चरित (सचित्र)		500.00

श्री मदन रहेजा कृत शंका-निवारक पुस्तकें

बाल शंका समाधान		25.00
यज्ञ क्या? क्यों? कैसे?		35.00
एक वाक्य में समाधान	नई	50.00
वैदिक गणपति		55.00
अन्धविश्वास निर्मूलन		125.00
शंका समाधान		90.00
सुविचार		50.00
वेदों की वाणी सन्तों की जुबानी		115.00

स्वामी वेदानन्दतीर्थ कृत आध्यात्मिक पुस्तकें

मनुप्रोक्त आध्यात्मिक उपदेश-संग्रह		40.00
स्वाध्याय सन्दीप		350.00
स्वाध्याय सन्दोह		प्रेस में

पं. वीरसेन वेदश्रमी कृत तलस्पर्शी साहित्य

वैदिक सम्पदा		300.00
वैदिक सूक्त-माला		12.00

स्वामी अचुत्यानंद सरस्वती

चतुर्वेद-शतकम		60.00

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती कृत साहित्य

स्वामी दयानन्द का वैदिक दर्शन		225.00
प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार)		595.00
प्राचीन भारत में रसायन का विकास		695.00

कथाएँ-कहानियाँ-गाथाएँ-नामावली-सूक्तियाँ

ज्ञान कथाएँ	अशोक कौशिक	150.00
प्रेरक कथाएँ	अशोक कौशिक	125.00
उपनिषद् की कथाएँ	अशोक कौशिक	80.00
शेखसादी की कहानियाँ	डॉ. मनोहरलाल	50.00
राजा भोज की कहानियाँ	डॉ. मनोहरलाल	50.00
स्वामी विवेकानन्द की कहानियाँ	संतराम वत्स्य	40.00
रामकृष्ण परमहंस की कहानियाँ	संतराम वत्स्य	40.00
शहीदों की गाथाएँ	शिवकुमार गोयल	60.00
जवानों की गाथाएँ	शिवकुमार गोयल	35.00
नामायन (दस हज़ार सार्थक नामों का कोष)	त्रिवेणी	495.00
अमृत वाणी	डॉ. मनोहरलाल	125.00
दोहा-सूक्ति सरोवर	डॉ. मनोहरलाल	125.00

2016 के महत्वपूर्ण प्रकाशन

आनन्द रस-धारा : प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' रु. 90.00

महात्मा आनन्द स्वामी वेदभक्त, ऋषिभक्त, प्रभुभक्त, देशभक्त, जातिभक्त और लोकसेवक थे। उनके इस जीवन चरित से पाठकों को सत्प्रेरणाएँ, उर्जा, मानसिक शान्ति तथा आध्यात्मिक भोजन मिलेगा।

यज्ञ-क्या? क्यों? कैसे ? : श्री मदन रहेजा रु. 35.00

यज्ञ का पूर्ण लाभ हमें तभी मिलेगा जब हम सभी याज्ञिक क्रियाओं को विधियुक्त व शास्त्रीय निर्देशानुसार करेंगे। यज्ञ-विधि के साथ-साथ यज्ञ से सम्बन्धित लगभग सभी सम्भावित प्रश्नों पर भी लेखक ने गहराई से विचार करते हुए ज्ञातव्य तथ्यों से पाठकों को सरलतापूर्वक अवगत कराया है।

The Principal Upanishads Rs. 750.00
by Svami Satya Prakash Sarasvati

Lucid English translation of all Eleven Upanishads by a great vedic scholar and Sanyasi Svami Satyaprakash Sarasvati. This translation will clarify many doubts regarding the principles of the Upanishads and will show a new path to the admirers and readers of the Upanishads. Pages: 670

Mystery of Death by Sh. Madan Raheja Rs. 150.00

We fear from our death, this fear of death takes away all our happiness and joys. There are many different kinds of fear like fear of separating from our loved ones, relatives, friends forever, fear of loosing our hardearned belongings, etc. The most important cause of fear of death is 'Ignorance'. The author has discussed this 'Ignorance' in this book. Pages: 184

बाल शंका समाधान : श्री मदन रहेजा रु. 25.00

आज माता-पिता अपने काम-काज में व्यस्त रहते हैं, इसलिये बच्चों को सही मार्ग दर्शन की अत्याधिक आवश्यकता है। इस पुस्तक द्वारा बच्चों को ही नहीं अपितु उनके माता-पिता तथा सगे-संबंधियों को भी सत्य सनातन वैदिक धर्म का समान्य ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

प्राप्ति स्थानः विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
4408, नई सड़क, दिल्ली-6, दूरभाष 23977216, 65360255
Email: ajayarya16@gmail.com Web: www.vedicbooks.com